अनुबोधन, खण्ड 2, अंक 1, मार्च 2026, पृष्ठ 432–452
ISSN: 3049-4184 (प्रिन्ट), 3108-1185 (ऑनलाइन)
https://doi.org/10.65885/anubodhan.v2n1.2026.041

भारत की सॉफ्ट पावर कूटनीति एवं 2047 में विकसित भारत का लक्ष्य

डॉ. विजेन्द्र कुमार यादव*

प्राप्तिः 25 मार्च 2026 / स्वीकृतः 30 मार्च 2026 / प्रकाशितः 31 मार्च 2026
जर्नल वेबसाइटः https://anubodhan.org

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में सबसे पहले सॉफ्ट पावर की अवधारणा पर विचार किया गया है और साथ ही साथ हार्ड पावर से इसके अंतर को समझने का प्रयास किया गया है। तत्पश्चात भारतीय संदर्भ में सॉफ्ट पावर की अवधारणा को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। जोसेफ नाई जूनियर द्वारा सॉफ्ट पावर को मजबूत बनाने हेतु सुझाए गए विभिन्न आयामों यथा – संस्कृति, राजनीतिक मूल्य और विदेश नीति, के अंतर्गत भारतीय सॉफ्ट पावर को विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है। आगे यह भी समझने का प्रयास किया गया है कि भारतीय सॉफ्ट पावर किस प्रकार से विभिन्न भू–राजनीतिक मुद्दों को साधने में भारत के लिए अहम भूमिका का निर्वहन कर सकती है। भारत ने अपनी आजादी के समय 1947 में जो यात्रा एक गरीब, अल्पविकसित, अल्पशिक्षित राष्ट्र के रूप में शुरू की थी आज वह यात्रा दुनिया की पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में एक महत्वपूर्ण पड़ाव पर पहुंच चुकी है जिसका अगला लक्ष्य 2047 में भारत को एक विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित करना है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए भारत को 2047 तक एक विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित करने में सॉफ्ट पावर नीति कहां तक मदद कर सकती है इसका विश्लेषण इस शोध पत्र में किया गया है। वर्तमान में इस संदर्भ में क्या–क्या बाधाएं हैं और इन्हें कैसे दूर किया जा सकता है इन बातों पर विचार करते हुए शोध पत्र का समापन किया गया है।

मूल शब्दः सॉफ्ट पावर, सांस्कृतिक कूटनीति, राजनीतिक मूल्य, जन कूटनीति, विदेश नीति, विकसित भारत।

*सहायक प्राध्यापक (असिस्टेंट प्रोफेसर), राजनीति शास्त्र विभाग, ए. के. पी. जी. कालेज शिकोहाबाद, फीरोजाबाद (उ. प्र.)–283141
E-mail: vijendrakyadav786@gmail.com

भूमिका

सापेक्ष रूप से भारत एक प्राचीन सभ्यता वाला नवीन देश है। ऐतिहासिक काल से ही भारत रेशम मार्ग (Silk Route) के माध्यम से एशिया व यूरोप के सुदूरवर्ती क्षेत्रों से जुड़ा रहा है। समुद्र के रास्ते भारत का संपर्क पूर्वी अफ्रीका व दक्षिण एशिया तथा दक्षिण–पूर्व एशिया से सदियों से रहा है। इस प्रकार कह सकते हैं कि भारत विभिन्न संस्कृतियों के चौराहे पर स्थित है। इस संपर्क का परिणाम यह हुआ कि भारत में कई संस्कृतियां आपस में घुल–मिल गईं और भारत बहु–नृजातीय, बहु–सांस्कृतिक व बहु–धार्मिक देश बन गया। इस विविधता का परिष्कृत परिणाम आज भारत को एक सॉफ्ट पावर के रूप में स्थापित करता है। वैसे तो किसी देश की सॉफ्ट पावर उस देश की सभ्यता, संस्कृति, साहित्य, दर्शन, कूटनीति, वैश्विक संस्थाओं एवं संगठनों में सहभागिता तथा उसकी क्षमता एवं सामर्थ्य द्वारा निर्धारित होती है परंतु जो देश वैश्विक स्तर पर अपने प्रभाव एवं हैसियत का विस्तार करना चाहते हैं उनके लिए इसका विशेष महत्व है।[1]

भारत के पास एक महत्वपूर्ण मृदु शक्ति (Soft Power) बनने की क्षमता व अवसर दोनों हैं। हालांकि बिना सैन्य व आर्थिक शक्ति के किसी देश की सॉफ्ट पावर बनने की चाह कोरी कल्पना साबित हो सकती है परंतु इस लिहाज से भी भारत क्षमतावान देश है। सॉफ्ट पावर एवं हार्ड पावर एक दूसरे के स्थानापन्न नहीं बल्कि राष्ट्रीय हितों को प्राप्त करने के समान रूप से महत्वपूर्ण दो अलग–अलग साधन है। वैसे सॉफ्ट पावर की अवधारणा को देखते हुए कहा जा सकता है की सॉफ्ट पावर की नीति एक लंबे समय में कार्य करती है और किसी देश की सॉफ्ट पावर की नीति व उसके चलते दूसरे देशों की नीतियों में उसके प्रति होने वाले बदलावों को बहुत स्पष्टता के साथ दर्शाया नहीं जा सकता। फिर भी अमेरिका और चीन तथा अन्य देशों द्वारा अपनी सॉफ्ट पावर के इस्तेमाल एवं उससे मिलने वाले प्रतिफलों का विश्लेषण करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि यदि भारत अपनी सॉफ्ट पावर क्षमता का इस्तेमाल सही तरीके से करे तो भारत को 2047 तक एक विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित करने में एवं वैश्विक फलक पर भारत के प्रभाव विस्तार में बहुत सहूलियत हो सकती है। इस शोध–पत्र में इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए भारत की सॉफ्ट पावर क्षमता एवं उसकी प्रभावशीलता को विश्लेषित किया गया है।

स्वतंत्रता से अब तक भारत की यात्रा की कहानी उल्लेखनीय परिवर्तनों, लचीलेपन एवं महत्वाकांक्षाओं की कहानी है। स्वतंत्रता के समय भारत ने बहुत अधिक चुनौतियों को सामना किया था जैसे– चारों ओर फैली गरीबी और भुखमरी, अत्यधिक निरक्षरता, स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं का अभाव और कमजोर औद्योगिक एवं कृषि प्रणाली। आज सात दशक बीत जाने पर भारत दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। आज भारत तकनीकी नवाचारों के केंद्र एवं वैश्विक भू–राजनीति में एक सम्मानित आवाज के रूप में अपने को स्थापित करने में सफल हो सका है। भारत की यह यात्रा उसके मजबूत लोकतांत्रिक संस्थाओं, ऊर्जावान कुशल युवाओं तथा समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की कहानी है। जैसे–जैसे भारत 2047 में स्वतंत्रता की शताब्दी के करीब पहुंच रहा है, विकसित भारत की परिकल्पना एक राष्ट्रीय आकांक्षा एवं रणनीतिक अनिवार्यता दोनों बन जाती है। विकसित भारत की परिकल्पना केवल आर्थिक समृद्धि की परिकल्पना

नहीं हो सकती बल्कि इसे आर्थिक समृद्धि की सीमाओं से परे जाना होगा। विकसित भारत की परिकल्पना समावेशी विकास, सामाजिक न्याय, वैज्ञानिक प्रगति, पर्यावरण संरक्षण और सांस्कृतिक पुनरुत्थान को समाहित करने वाले एक समग्र ढांचे का प्रतिनिधित्व करती है। भारत सही मायने में विकसित राष्ट्र तभी बन सकता है जब वह न केवल अपने सभी नागरिकों को आर्थिक समृद्धि प्रदान करें बल्कि सभी नागरिकों के लिए गरिमा, समानता और स्थिरता भी सुनिश्चित करे। विकसित भारत का दृष्टिकोण प्रगति के कई आयामों को संरेखित करता है यथा– 1. असमानताओं को कम करते हुए सतत आर्थिक विकास 2. सर्व सुलभ तकनीकी नवाचारों का लाभ उठाना 3. लोकतांत्रिक मूल्यों को संरक्षित करते हुए शासन का आधुनिकीकरण 4. पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखते हुए औद्योगीकरण को बढ़ाना। ऐसा करते हुए ही भारत अपनी विशाल मानव पूंजी को भविष्य के परिवर्तनों हेतु तैयार कर सकेगा, जनसांख्यकीय लाभांश को जनसांख्यकीय आपदा बनने से रोक सकेगा और व्यापार, कूटनीति एवं सॉफ्ट पावर के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व कर सकेगा।[2]

सॉफ्ट पॉवर

किसी भी राष्ट्र की विदेश नीति मुख्य रूप से कुछ सिद्धांतों, हितों व उद्देश्यों का समूह होती है, जिनके माध्यम से वह राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों के साथ संबंध स्थापित करके उन सिद्धांतों की पूर्ति हेतु कार्यरत रहता है।[3] विदेश नीति की सफलता शक्ति पर निर्भर करती है और विदेश नीति के क्षेत्र में दो प्रकार की शक्तियों का प्रयोग किया जाता है– 1. सॉफ्ट पावर 2. हार्ड पावर। 'सॉफ्ट–पॉवर' शब्द का सबसे पहले प्रयोग एवं उसे लोकप्रिय बनाने का कार्य अमेरिकी नवउदारवादी विचारक जोसेफ नाई जूनियर के द्वारा अपनी पुस्तक 'बाउन्ड टू लीड : द चेंजिग नेचर ऑफ अमेरिकन पॉवर' में 1990 में किया गया। शीघ्र ही इस शब्द का प्रयोग विद्वानों द्वारा, मीडिया एवं नीति–निर्माताओं द्वारा तथा विभिन्न देशों की विदेश नीति में होने लगा। न केवल अमेरिका बल्कि यूरोपियन–यूनियन, जापान, आस्ट्रेलिया, चीन व भारत में भी इस शब्दावली का व्यापक स्तर पर प्रयोग किया जाने लगा।

सॉफ्ट–पॉवर शब्दावली का प्रयोग एक ढंग से नव–यथार्थवादियों के विरुद्ध किया गया। चूंकि नवयथार्थवादियों का जोर सैन्य व आर्थिक शक्ति पर रहा है परन्तु इसके विपरीत सॉफ्ट पॉवर के समर्थक यह मानते हैं कि शीतयुद्धोत्तर काल की वैष्विक दुनिया में जहाँ अन्तर्निभरता एवं संचार तकनीकी का तेजी से विकास एवं नए गैर–राज्य कर्त्ताओं का तेजी से ऊभार हुआ है सॉफ्ट पॉवर का उतना ही महत्त्व है जितना कि आर्थिक व सैन्य शक्ति का। किसी देश की सॉफ्ट पॉवर उसकी इस योग्यता पर निर्भर करती है कि अपनी अपेक्षा के अनुरूप वह दूसरे देशों की प्राथमिकताओं को कैसे प्रभावित करता है न कि दूसरे देशों को प्रलोभन देकर या मजबूर करके अपने उद्देश्य को पूरा करता है।[4] जोसेफ नाई के अनुसार किसी देश की सॉफ्ट पॉवर तीन चीजों से मजबूत होती है-- (1) संस्कृति (2) राजनीतिक मूल्य और (3) विदेश नीति। लेकिन शर्त यह है कि उस देश की संस्कृति दूसरे देशों के लिए आकर्षण का केन्द्र हो, उस देश के द्वारा उच्च राजनीतिक मूल्यों का परिपालन आन्तरिक राजनीति व विदेश नीति दोनों में किया जाता हो तथा उस देश की विदेश नीति की स्वीकार्यता हो।[5] ऐसा होने पर ही सॉफ्ट पॉवर को

आर्थिक व सैन्य शक्ति से अलग समझा जायेगा। तथ्य यह भी है कि यदि कोई देश केवल सॉफ्ट पॉवर पर भरोसा करे और उसके पीछे सैन्य व आर्थिक शक्ति न हो तो उस देश की कमजोरी शीघ्रता से उजागर हो जायेगी जैसा कि 1962 के भारत–चीन युद्ध के समय हुआ।[6] यद्यपि स्वतन्त्रता के पश्चात् कमजोर आर्थिक व सैन्य शक्ति होने के बावजूद तत्कालीन प्रधानमन्त्री पं. जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में भारत ने अपनी सॉफ्ट पॉवर का वैष्विक स्तर पर बेहतरीन प्रयोग किया था परन्तु चीन के साथ संघर्ष में पराजय से भारतीय सॉफ्ट पॉवर की परिसीमाएँ उजागर हो गयीं।[7]

सॉफ्ट–पॉवर की अवधारणा समय के साथ विस्तृत होती गयी है। जैसा कि जोशुआ कुर्लेन्जिक ने सॉफ्ट–पॉवर को परिभाषित करते हुए कहा है-- सैन्य एवं सुरक्षा क्षेत्र के बाहर संस्कृति एवं कूटनीतिक तत्वों के अलावा इसमें सहायता (Aid), निवेश एवं बहुपक्षीय संगठनों में भागीदारी जैसे तत्त्वों को भी शामिल किया जाना चाहिए।[8] वर्तमान विश्व में किसी देश की आर्थिक क्षमता उसकी नीतियों की स्वीकार्यता बढ़ाने में वेहद मददगार है। ऐसे में आर्थिक क्षमता वाले देश की नीतियों की वैधता की सम्भावना बढ़ जाती है।

यह जान लेना महत्त्वपूर्ण है कि अपनी बढ़ती हुई लोकप्रियता के बावजूद सॉफ्ट–पॉवर की अवधारणा अपनी सैद्धान्तिक व व्यावहारिक कमजोरियों के कारण आज भी बहस का विषय है। अस्पष्ट, अनिश्चित व दुर्ग्राहय होने के कारण इसकी आलोचना की जाती है। बहुत हद तक व्यक्तिनिष्ठ अवधारणा हो जाने के कारण इसे सैन्य एवं आर्थिक शक्ति की तरह अनुमानित नहीं किया जा सकता।[9] उदाहरण के लिए किसी देश के टैंकों की गणना तो की जा सकती है परन्तु किसी देश की नीतियों की स्वीकार्यता एवं संस्कृति की प्रभावशीलता का अनुमान लगाना सरल कार्य नहीं है और फिर यह बात भी तो है कि किसी देश के पास यदि सॉफ्ट पॉवर की क्षमता है भी तो इस बात की क्या गारण्टी है कि वह देश अपनी इस क्षमता का सही तरीके से प्रयोग भी कर सके।

साफ्ट पॉवर लोगों की अनुभूति का विषय है। इसे सकारात्मक दिशा में बदलना आसान कार्य नहीं है। सॉफ्ट पॉवर पर व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों का व्यापक असर होता है। ऐसा भी देखा जाता है कि जो चीज किसी के लिए आकर्षक होती है वही दूसरों के लिए अरुचिकर भी हो सकती है। उदाहरण के लिए बालीवुड की फिल्में विभिन्न एशियाई व अफ्रीकी देशों में भारत की सॉफ्ट पॉवर का स्रोत हैं तो वहीं यूरोप में इन फिल्मों को उतना नहीं सराहा जाता। ठीक उसी प्रकार जैसे हालीवुड की फिल्में भारत के नवजवानों में सराहना प्राप्त करती है परन्तु ईरान के अधिक रूढ़िवादी समाज में इन फिल्मों का वैसा प्रभाव नहीं है। इसके अलावा ऐसा भी नहीं है कि किसी देश के सांस्कृतिक आकर्षण एवं मूल्यों का दूसरे देश के विशेष निर्णयों पर कोई सीधा प्रभाव पड़ता ही हो। जैसे पाकिस्तानी नौजवान अमेरिका की लोकप्रिय संस्कृति को तो पसन्द करते हैं लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि वे पाकिस्तानी सरकार को अमेरिकी ड्रोन हमले को स्वीकार करने के लिए भी राजी करेंगे।

यह बात भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण है कि 'साफ्ट–पॉवर' एवं 'हार्ड पॉवर' एक दूसरे के स्थानापन्न नहीं बल्कि राष्ट्रीय हितों को प्राप्त करने के समान रूप से महत्त्वपूर्ण दो अलग–अलग साधन हैं। जैसा कि जे. नाई ने बताया है कि इनमें से किसी एक पर

भरोसा करना भूल होगी। सबसे अच्छी स्थिति तो वह होती है जब इन दोनों का प्रभावशाली तरीके से सम्मिलित रूप में प्रयोग किया जाय। इन दोनों के सम्मिलित प्रयोग को जे. नाई ने स्मार्ट पावर (Smart Power) कहा है।[10] चाहे जो भी हो लेकिन अपनी कमजोरियों के बावजूद भी सॉफ्ट–पॉवर की अवधारणा ने विभिन्न देशों की विदेश नीतियों में प्रभावशाली तरीके से जगह बनायी है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में सॉफ्ट पॉवर

भारत के लिए 'सॉफ्ट–पॉवर' की धारणा कोई नई व अदभुत बात नहीं है क्योंकि भारत 'सॉफ्ट–पॉवर' के उपकरणों का इस्तेमाल स्वतन्त्रता के बाद से ही करता रहा है यद्यपि इसके प्रयोग के स्वरूप एवं इसकी समझ को लेकर काफी बदलाव आया है। यद्यपि 'सॉफ्ट–पॉवर' शब्द का प्रयोग शीत युद्ध के दौरान होना शुरू हुआ लेकिन भारत तो शुरू से ही दुनिया के उन चुनिन्दा देशों में शुमार रहा है जिनके पास 'सॉफ्ट–पॉवर' के बेहद समृद्ध स्रोत रहे हैं। लम्बी औपनिवेशिक गुलामी के बाद आजाद हुए देश भारत के पास अपनी वैष्विक महत्वाकांक्षाएँ पूरा करने के लिए 'सॉफ्ट–पॉवर' के अलावा कोई अन्य रास्ता हो भी नहीं सकता था क्योंकि उस समय भारत आर्थिक व सैन्य–शक्ति के रूप में विपन्न देश था। गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का संस्थापक होने, साम्राज्यवादी व उपनिवेशवादी शक्तियों के आलोचक तथा शस्त्रीकरण का विरोध करते हुए भारत ने जिन मूल्य–आधारित नीतियों का समर्थन किया उससे नए स्वतन्त्र एवं विकासशील देशों में भारत अपनी आकर्षक छबि बनाने में कामयाब रहा। भारतीय आध्यात्मिकता, योग व चिकित्सा पद्धति, महात्मा गांधी की अंहिसा की विरासत में जैसे–जैसे पश्चिमी विकसित देशों की रुचि बढ़ी वैसे ही वैसे भारत विकसित दुनिया की सहानुभूति प्राप्त करने में सफल भी रहा है। लेकिन जैसे–जैसे नेहरू की आदर्शवादिता का प्रभाव भारतीय विदेश नीति में घटा और यथार्थवाद का प्रभाव बढ़ा है वैसे ही भारतीय विदेश नीति में सॉफ्ट–पॉवर का प्रभाव भी घटता चला गया है[11] परन्तु 1990 के दशक से भारतीय विदेश नीति में जे. नाई के नुस्खे का अनुकरण करते हुए सॉफ्ट पॉवर को अधिक महत्त्व देने का प्रयास दिखायी देता है।

अब तक का अनुभव तो यही बताता है कि 'सॉफ्ट–पॉवर' उपागम को भारतीय विदेश–नीति में बहुत तन्मयता से लागू करने का प्रयास नहीं किया गया है। जबकि चीन में स्थित इसके विपरीत है। चीन ने भारत की अपेक्षा अपनी विदेश नीति में सॉफ्ट–पॉवर को अधिक महत्त्व दिया है।[12] भारतीय राजनीतिक नेतृत्व अपने भाषणों में यदा–कदा सॉफ्ट पॉवर की चर्चा करता रहा है परन्तु सुरक्षा व रणनीति से जुड़े नीतिगत स्तर पर इसे बहुत महत्त्व नहीं दिया गया है। यह बात इससे भी जाहिर होती है कि इस विषय पर लेखन कार्य भी सीमित रहा है। भारतीय विदेश नीति का यथार्थवादी दृष्टिकोण सुरक्षा सरोकारों व आर्थिक प्राथमिकताओं पर जोर देने का रहा है।

लेकिन यदि हम पिछले दो–तीन दशकों में भारतीय विदेश नीति–निर्माताओं द्वारा लिये निर्णयों को ध्यान से विश्लेषित करें तो हम पाते हैं कि तमाम ऐसे निर्णय लिये गये हैं जो भारत की सॉफ्ट–पॉवर क्षमता को बढ़ाने का कार्य करते हैं। परिणामतः ऐसे भारतीय विद्वानों एवं नीति–निर्माताओं की संख्या तेजी से बढ़ी है जिन्होंने भारतीय सॉफ्ट–पॉवर को काफी महत्त्व दिया है। जैसे सी. राजा मोहन ने प्रवासी भारतीयों को

देश की सॉफ्ट पॉवर की सबसे बड़ी सम्पत्ति माना है।[13] सॉफ्ट पॉवर के समर्थकों में शशि थरूर का नाम सबसे पहले आता है। उनका कहना है कि भारत को सबसे अधिक ध्यान जिस चीज पर देना चाहिए वह सॉफ्ट पॉवर है न कि आर्थिक, सैन्य या परमाणुशक्ति।[14]

आई.सी.सी.आर. के अध्यक्ष रहे डॉ. करन सिंह का विदेशों में आयोजित होने वाले सांस्कृतिक उत्सवों के सम्बन्ध में कहना है कि सांस्कृतिक कूटनीति को पहले बहुत सतही तरीके से लिया जाता था लेकिन अब स्थिति बदल गयी है अब सॉफ्ट पॉवर का महत्त्व बढ़ गया है। अतः विदेशों में आयोजित होने वाले समारोहों में भारत को उदार–बहुलवादी एवं बहुसांस्कृतिक समाज के रूप में प्रदर्शित किये जाने की जरूरत है।[15]

भारतीय विद्वान शक्ति के दोनों रूपों के पेंचीदा सम्बन्धों को लेकर अनभिज्ञ नहीं हैं। उनके द्वारा वैदेशिक सम्बन्धों के संचालन के लिए 'हार्ड–पॉवर' एवं 'सॉफ्ट–पॉवर' दोनों को ही जरूरी माना गया है। यह बात उन्हें जोसेफ नाई के 'स्मार्ट पॉवर' की अवधारणा के नजदीक ले आती है। चीन के मुकाबले भारतीय पराजय के सम्बन्ध में शशि थरूर का कहना है कि यदि नेहरू की 'सॉफ्ट–पॉवर' नीति के पीछे 'हार्ड पॉवर' की ताकत रही होती तो भारत को 1962 जैसी शर्मनाक पराजय का सामना न करना पड़ता।[16] 'सॉफ्ट–पॉवर' का महत्त्व व क्षमता तब प्रभावशाली तरीके से बढ़ जाती है जब उसके पीछे 'हार्ड पॉवर' का सम्बल होता है। मौजूदा समय में भारतीय राजनीतिक नेतृत्व इसी मत के साथ आगे बढ़ रहा है।

भारतीय सॉफ्ट पॉवर : विशेषताएँ

पिछले दशकों में भारतीय विदेश–नीति में होने वाले परिवर्तनों को बेहतर तरीके से समझने हेतु यह जानना बेहद जरूरी है कि कैसे सॉफ्ट–पॉवर देश की विदेश–नीति का एक अहम हिस्सा बन गई है। जोसेफ नाई द्वारा विकसित ढांचे के आधार पर भारतीय सॉफ्ट पॉवर की विशेषताओं को निम्नवत दर्शाया जा सकता है–

संस्कृति– भारत की संस्कृति दुनिया की सबसे पुरानी व समृद्धिशाली संस्कृति होने के नाते यह अकेले ही सॉफ्ट–पॉवर का महत्त्वपूर्ण स्रोत है। बाहर से आने वालों को भारतीय संस्कृति सिकन्दर के समय से ही मन्त्र–मुग्ध करती रही है। भारत बौद्ध धर्म का जन्म स्थान है जो बाद में मध्य–एशिया, पूर्व–एशिया व दक्षिण पूर्व एशिया तक फैला। दक्षिण–पूर्व एशिया के देशों की संस्कृति पर हिन्दू धर्म का विशेष प्रभाव रहा है। इन पुराने सांस्कृतिक–सम्बन्धों व धार्मिक विरासत का देश के प्रथम प्रधानमन्त्री नेहरू ने अपनी विदेश नीति में बखूबी इस्तेमाल किया है। यद्यपि इसके मिले जुले परिणाम रहे। फिर भी आज भी यह मूल्यवान सांस्कृतिक सम्पत्ति है।[17]

इसके अतिरिक्त भारतीय कला, संगीत, नृत्य, योग, आयुर्वेद, अहिंसा के सिद्धान्त, दर्शन, आध्यात्मिकता, फैशन और पाक कला के दुनियां में बहुत बड़ी संख्या में चाहने वाले लोग हैं। एक अध्ययन में तो पाया गया है कि भारतीय और चीनी संस्कृति मिलकर पश्चिमी सांस्कृतिक मूल्यों का एक उचित विकल्प प्रस्तुत करती हैं।[18] संचार तकनीकी के विकास ने भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को दुनियां के कोने–कोने तक फैलाने का काम

किया है। जैसा कि शशि थरूर कहते हैं– जब भारतीय क्रिकेट टीम जीतती है अथवा कोई भारतीय टेनिस खिलाड़ी ग्रैण्ड स्लैम जीतता है, जब पश्चिमी पॉप संगीत के साथ मिलकर भांगड़ा बजता है अथवा कोई भारतीय संगीत शिक्षक कत्थक व बैले नृत्य को मिलाकर प्रशिक्षण देता है, जब भारतीय महिलाएँ मिस वर्ल्ड व मिस यूनिवर्स का खिताब जीतती है, जब लगान जैसी फिल्में ऑस्कर के लिए नामित की जाती है अथवा कोई भारतीय लेखक बुकर या पुलित्जर पुरस्कार जीतता है; ऐसे में भारतीय सॉफ्ट–पॉवर की क्षमता बढ़ जाती है।[19]

भारतीय खिलाड़ियों का खेलों में प्रभाव धीरे–धीरे बढ़ रहा है। वैसे इस क्षेत्र में भारत का अनुभव अब तक बहुत अच्छा नहीं रहा है। ओलम्पिक जैसे आयोजनों में बहुत अच्छा प्रदर्शन न रहने के बावजूद पिछले कुछ वर्षों में भारत की कोशिश रही है कि बड़े खेल आयोजनों के माध्यम से अपनी शक्ति को दुनिया के सामने रखे। उदाहरण के लिए इण्डियन प्रीमियर क्रिकेट लीग (IPL), 2010 में कॉमनवेल्थ खेलों का आयोजन, इण्डियन ग्रैण्ड प्रिक्स के नाम से फार्मूला बन कार रेसिंग का 2011 में आयोजन आदि की चर्चा की जा सकती है। क्रिकेट में भारत की बढ़ती क्षमता खास–तौर से उन देशों में जहाँ यह खेल खेला जाता है, महत्त्वपूर्ण कूटनीतिक भूमिका अदा कर सकती है। जैसा कि दक्षिण एशिया में 'क्रिकेट कूटनीति' (Cricket Diplomacy) ने पहले भी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

हाल के वर्षों में 'सांस्कृतिक–कूटनीति' एवं प्रचारात्मक गतिविधियों के माध्यम से भारत की कोशिश रही है कि अपनी सांस्कृतिक ताकत का विदेश–नीति में बखूबी इस्तेमाल किया जाय। किसी भी देश की संस्कृति व राजनीतिक मूल्यों का प्रसार उस देश के लोगों के द्वारा होता है, चाहे वे देश में रह रहे हों या बाहर। भारत की इस विषय में कोशिश रही है कि भारतीय एवं प्रवासी भारतीय दोनों इस सन्दर्भ में सकारात्मक भूमिका अदा करें। इसके लिए भारतीय दूतावासों के द्वारा वैष्विक स्तर पर कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता रहा है। विदेश मन्त्रालय द्वारा इस हेतु जन कूटनीति विभाग (Public Deplomacy Department) का गठन किया गया है। भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद (ICCR) तथा सार्वजनिक व निजी क्षेत्र के सम्मिलित प्रयासों से सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता रहा है। निजी क्षेत्रों यथा-- मनोरंजन उद्योग, मीडिया घरानों, व्यापारिक संगठनों व गैर सरकारी संगठनों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों ने सरकारी स्तर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रम के पूरक की भूमिका का निर्वहन किया है।

आई.सी.सी.आर. का गठन सरकार द्वारा विदेशों में भारतीय संस्कृति व लोगों के बीच सम्पर्क को बढ़ावा देने के लिए किया गया है। इस संस्था द्वारा विदेशों में भारतीय सांस्कृतिक केन्द्रों का संचालन, विदेशी विश्वविद्यालयों में भारतीय अध्ययन पीठों की स्थापना, छात्रवृत्ति व फेलोशिप प्रदान करना, भारतीय सांस्कृतिक महोत्सवों, सेमीनारों व सम्मेलनों आदि का आयोजन करने का कार्य किया जाता है। भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद की बढ़ती गतिविधियां भारतीय सांस्कृतिक कूटनीति के नए आयामों की ओर संकेत करती हैं। भारतीय सांस्कृतिक केन्द्रों की संख्या जहां 2007 में 22 थी वहीं 2013 में बढ़कर यह 35 हो गयी। भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद की योजना है कि भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने एवं अपनी पहुँच बढ़ाने के लिए 15 नए सांस्कृतिक केन्द्रों की

स्थापना विभिन्न देशों में की जाय। योजनानुसार इन केन्द्रों की स्थापना निकट पड़ोस एवं वृहत्तर पड़ोस, पी.--5 देशों की राजधानियों, अफ्रीका महाद्वीप के देशों तथा लैटिन अमेरिकी देशों में की जानी है।[20] अब तक कुल 38 भारतीय सांस्कृतिक केंद्रो की स्थापना की जा चुकी है यद्यपि पिछले 10 सालों में सांस्कृतिक केंद्रो की स्थापना की गति धीमी हुई है। भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद द्वारा कुल अब तक 140 से ज्यादा अध्ययन पीठों की विभिन्न विष्वविद्यालयों में स्थापना की गई है जहाँ प्रति नियुक्त विद्वानों द्वारा विभिन्न भारतीय विषयों एवं भारतीय भाषाओं की शिक्षा दी जाती है।[21]

अध्ययन पीठों के अलावा 4 फेलोशिप कार्यक्रम भी भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद द्वारा चलाए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त आई.सी.सी.आर. भारत में अध्ययन हेतु भी विदेशी लोगों के लिए स्कॉलरशिप की व्यवस्था करती है। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की वार्षिक रिपोर्ट 2024—25 के अनुसार 80 देशों से ज्यादा के लगभग 3960 छात्र विभिन्न स्कॉलरशिप कार्यक्रमों के अंतर्गत स्नातक, परास्नातक एवं शोध संबंधी पाठ्यक्रमों में अध्यनरत हैं।[22] मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा उपलब्ध कराए गए उच्च शिक्षा संबंधी अखिल भारतीय सर्वेक्षण के उपलब्ध नवीनतम आंकड़ों के अनुसार सत्र 2025—26 मैं कुल 72,218 विदेशी छात्र विभिन्न पाठ्यक्रमों में नामांकित थे।[23] भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद के कुल बजट का एक बड़ा भाग छात्रवृत्ति पर खर्च किया जाता है। वित्तीय वर्ष 2025-26 में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद का कुल बजट 351 करोड रुपए था।[24] इन सबके बावजूद जब हम चीन से तुलना करते हैं तो पाते हैं यह चीन की तुलना में बहुत कम है। चीन ने लगभग 500 कन्फ्यूसियस संस्थानों की स्थापना पूरे विश्व में की है और ये चीन की सॉफ्ट—पॉवर को मजबूत बनाने के साथ ही उसकी स्वीकार्यता बढ़ाने में मदद कर रहे हैं।

भारत की परम्परागत व आधुनिक कलाओं की बढ़ती वैष्विक स्वीकार्यता ने भी भारत की सॉफ्ट—पॉवर की क्षमता को बढ़ाने का कार्य किया है। विश्व में जहाँ कहीं भी एशियाई कला प्रदर्शनियों का आयोजन किया जाता है वहां भारतीय कला संग्रहालय लोगों के आकर्षण का विशेष केन्द्र होते हैं। आज विश्व स्तर की नीलामी व प्रदर्शनी आयोजनों में भारतीय कलाकारों की बढ़ती धमक महसूस की जा सकती है। यद्यपि इस क्षेत्र में अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। भारत की परम्परागत वास्तुकला को और अधिक प्रचार की जरूरत है। भारत के शहरी क्षेत्रों में कंक्रीट के जंगल तो दिखाई देते हैं परन्तु उसमें परम्परागत वास्तुकला का अभाव दिखाई देता है। यदि इण्डोनेशिया में भारत उद्भूत वास्तुकला एवं चित्रकला दर्शकों को विस्मित कर सकती है तो इसका यही अर्थ है कि अभी इस क्षेत्र में बहुत कुछ किया जाना बाकी है।

भारतीय पाककला ने विश्व स्तर पर अद्भुत प्रभाव छोड़ा है। इंग्लैण्ड में तो आज भारतीय भोजन सबसे ज्यादा पसंद किया जाने वाला अन्तर्राष्ट्रीय भोजन है। उत्तर भारतीय भोजन दक्षिण भारतीय भोजन की अपेक्षा ज्यादा पसंद किया जाता है। लेकिन दक्षिण भारतीय भोजन को अभी और प्रचार की आवश्यकता है ठीक से ब्राण्डिंग की जाय तो केरल की पाककला को थाई पाककला का विकल्प बनाया जा सकता है। सरकारी संस्थाओं व प्राइवेट निगमों की मुहिम द्वारा भारत के विभिन्न क्षेत्रों की पाककला को विश्व स्तर पर लोकप्रिय बनाया जा सकता है।

आज जब दुनियां में ज्यादा से ज्यादा लोग कैंसर व हृदय सम्बन्धी बीमारियों से बचने के लिए शाकाहारी भोजन अपना रहे हैं तो ऐसे में शाकाहारी भोजन, जिसे भारत में अधिसंख्य लोग खाते हैं, दुनियां के समक्ष खाने के ढेर सारे विकल्प प्रस्तुत करता है। यहां कमी इस बात की है कि एक स्पष्ट मुहिम का अभाव है जिसके कारण दुनियां में शाकाहारी भोजन के विकल्पों की ब्राण्डिंग नहीं हो पा रही है। इसी प्रकार भारत की परम्परागत चिकित्सा प्रणाली आयुर्वेद को भी ब्राण्डिंग की आवश्यकता है। विभिन्न बीमारियों के ईलाज में आयुर्वेद बेहतर विकल्प प्रस्तुत करता है। यद्यपि कड़े विनियमों के अभाव के कारण फर्जी दवाइयों व डॉक्टरों पर अंकुश नहीं लग पा रहा है।

आज अंग्रेजी भाषा में लिखित भारतीय साहित्य वैष्विक स्तर पर पढ़ा जा रहा है। आज अंग्रेजी साहित्य के अग्रणी लेखकों में कई भारतीय मूल के हैं और इनका विषय प्रायः भारतीय समाज या प्रवासी भारतीयों से जुड़ा होता है। इस सन्दर्भ में कई नाम गिनाए जा सकते हैं यथा-- सलमान रश्दी, अरुन्धती राय, अब्राहम वर्गीज, रोहिण्टन मिस्री, विक्रम सेठ, अमिताव घोष, अरविन्द अडिगा, किरन देसाई, वी.एस.नयपॉल आदि। ऐसे में भारतीय देशी भाषा में रचित साहित्य का प्रचार क्यों नहीं किया जा सकता ? लैटिन अमेरिकी लेखकों का प्रभाव वैष्विक स्तर पर ऐसे ही तो फैला है। अच्छे अनुवाद, प्रचार एवं बड़ी प्रकाशन संस्थाओं से सहयोग प्राप्त करके इस कार्य को किया जा सकता है।

परिधान एवं फैशन के मामले में भारत के पास शानदार क्षमता है। इस सन्दर्भ में भारत ढेर सारे विकल्प प्रस्तुत करने के कारण फैशन की दुनियां को रंगीन बनाता है। विविधताओं के सम्मिश्रण के कारण भारतीय कपड़ा उत्पादक तेजी से वैष्विक ब्राण्ड बन रहे हैं। अब आवश्यकता इस बात की है कि भारतीय कम्पनियां अन्य देशों की कम्पनियों के साथ मिलकर उत्पादन व प्रचार कार्य करें जिससे वैष्विक बाजारों तक पहुँच और आसान हो सके।

नृत्य के क्षेत्र में भी यदि शास्त्रीय भारतीय नृत्यों को आधुनिक नृत्यों के साथ सम्मिलित रूप में प्रस्तुत किया जाय तो ये नृत्य विदेशी लोगों को आकर्षित करने की अपार क्षमता रखते हैं। भारतनाट्यम्, कत्थक, कुचुपुड़ी, कत्थकली और मोहिनीअट्टम प्रमुख भारतीय शास्त्रीय नृत्य है। लेकिन अपने आदर्श रूप में ये विदेशी लोगों के लिए सरल नहीं हैं। बीटल्स, माइकल जैकसन, मैडोना और शकीरा जैसा कलाकारों ने अपने नृत्य व संगीत में भारतीय नृत्य एवं संगीत से प्रेरणा ली है।

वैसे भारतीय संगीत शान्तिप्रिय प्रकृति का है। फिर भी भांगड़ा जैसे नृत्य उत्तरी अमेरिका व अन्य अंग्रेजी भाषी क्षेत्रों में काफी लोकप्रिय रहे हैं। शादी व अन्य समारोहों में इसे आसानी से देखा जा सकता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत यथा-- हिन्दुस्तानी संगीत, कर्नाटक संगीत, वाद्यसंगीत (बांसुरी, तबला, सरोद), और गजल गायकी में वैष्विक स्तर पर लोकप्रिय होने की पर्याप्त क्षमता व सम्भावना है। प्रसिद्ध सितार वादक व संगीतकार पण्डित रविशंकर ने 1960 के दशक से भारतीय वाद्य संगीत को पश्चिम में लोकप्रिय बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। यहाँ भी इस बात की पर्याप्त सम्भावना है कि यदि भारतीय संगीत को पश्चिमी जगत एवं 21वीं सदी की जरूरतों के हिसाब से ढाला जाय तो इसके आकर्षण को और अधिक बढ़ाया जा सकता है।

अब अगर भारतीय फिल्मों की चर्चा की जाय तो हम पाते हैं कि भारतीय फिल्मों ने वैष्विक स्तर पर अपना प्रभाव बनाया है। बालीवुड किसी भी अन्य देश की तुलना में सबसे ज्यादा फिल्मे बनाता है। हालीवुड के बाद वैष्विक स्तर पर सबसे ज्यादा फिल्में वालीवुड की देखी जाती हैं। भारतीय फिल्में मनोरंजन के लिए जानी जाती हैं और एशिया, मध्य–पूर्व व अफ्रीका में खासतौर पर लोकप्रिय हैं। पष्चिमी देशों में भी इनकी लोकप्रियता धीरे–धीरे बढ़ रही है। यद्यपि अब भी गुणवत्तापूर्ण फिल्मों का अभाव है। भारतीय फिल्मों में यथार्थता का अभाव है। यदि मनोरंजन को यथार्थ से जोड़कर कहानियां गढ़ी जायं तो भारत वैष्विक फिल्म उद्योग में अपनी धमक बढ़ा सकता है। आवश्यकतानुसार विदेशी सहयोग अपेक्षित है। सन् 2008 में आयी फिल्म 'स्लमडॉग मिलिनियर' इसी बात का संकेत करती है। हाल में आयी फिल्में पी.के. व दंगल ने भारतीय फिल्म जगत में नये कथानक गढ़े और उनकी सफलता बताती है कैसे भारतीय फिल्म उद्योग चीन जैसे देश में अपनी पहुँच बढ़ा सकता है।

वर्तमान वैश्विक दुनियां में उन समाजों व सभ्यताओं का विशेष महत्त्व है जो बहुसांस्कृतिक व बहुलवादी हैं क्योंकि ऐसे में समान मूल्य व समान उद्देश्य न होने के बावजूद विभिन्न धार्मिक व नृजातीय पृष्ठभूमि के लोग एक साथ रहने के अभ्यस्त होते हैं और यही वर्तमान विश्व की जरूरत भी है। इस दृष्टिकोण से भारत की सॉफ्ट–पॉवर निश्चित रूप से बढ़ जाती है क्योंकि भारत सदियों से बहुआयामी सभ्यताओं व सांस्कृ तियों के आकर्षण का केन्द्र रहा रहा है। भारतीय समाज की सामर्थ्य हिन्दू व बौद्ध धर्म की शान्तिप्रियता के कारण, साथ ही साथ जैन, इस्लाम, सिख, ईसाई धर्म के मानने वालों के सदियों से एक साथ रहने के कारण अद्वितीय है। इसी कारण भारतीय सभ्यता को विश्व की सबसे चिरस्थायी व शानदार सभ्यता के रूप में जाना जाता है। भारतीय सभ्यता का योगदान सदियों से धर्म, दर्शन, कला, साहित्य, विज्ञान व गणित सभी क्षेत्रों में रहा है। नोबेल पुरस्कार प्राप्त प्रसिद्ध अर्थशास्त्री आमर्त्य सेन ने दर्शाया है कि भारत में ईश्वरवादियों एवं अनीश्वरवादियों के बीच बौद्धिक बहस, संशयवाद एवं स्वीकृत परम्पराओं के विरोध की एक लम्बी परम्परा रही है। विश्व के चार प्रमुख धर्मों यथा-- हिन्दू, बौद्ध, जैन व सिख धर्म का उद्‌गम स्थान भारत है। इतना ही नहीं यूरोप में स्वीकार किये जाने के काफी पहले लगभग 52 ई. में ईसाई धर्म भारतीय समुद्र तटीय स्थानों तक पहुँच चुका था। जबकि प्रताड़ित धर्म के रूप में जरथ्रुस्त्र एवं यहूदी धर्मों का भारत में दिल खोलकर स्वागत हुआ। इस्लाम धर्म का भारत में आगमन व प्रसार उत्तर व दक्षिण भारत में अलग–अलग तरीके से हुआ है। उत्तर भारत में इस्लाम आक्रमणकारियों द्वारा लाया गया एवं धर्मान्तरण द्वारा इसका प्रसार हुआ जबकि दक्षिण भारत में इसका आगमन अरब व्यापारियों द्वारा हुआ। दक्षिण भारत में इसका प्रसार मुख्यतः शान्तिपूर्ण तरीके से ही हुआ है। ऐसे में यह बात बहुत महत्त्वपूर्ण है कि कैसे अपेक्षाकृत शान्तिपूर्ण तरीके से ये सभी धर्म भारत में अस्तित्ववान हैं। यद्यपि इतिहास में 17वीं सदी में एवं 1930 के बाद स्वतन्त्रता प्राप्ति तक कुछ ऐसे अवसर आए जब धार्मिक सहिष्णुता कमजोर होती प्रतीत हुई लेकिन इसे अपवाद ही माना जा सकता है।

भारत में बाहर से आने वाले धर्मों जैसे इस्लाम व ईसाई धर्म पर हिन्दू और बौद्ध धर्मों का प्रभाव पड़ा और इन धर्मों में अलग प्रकार की मान्यताओं का विकास हुआ। शान्ति का विचार विभिन्न समयों पर विभिन्न भारतीय नायकों द्वारा प्रचारित व पल्लवित

किया गया। इस क्रम में महात्मा बुद्ध, अशोक, अकबर व महात्मा गांधी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

जिस शान्तिपूर्ण ढंग से बौद्ध धर्म का दक्षिण एशिया, चीन, जापान, दक्षिण–पूर्व एशिया एवं अन्य जगहों पर प्रसार हुआ वह बहुत प्रभावशाली है। इसे दूसरे शब्दों में भारतीय सॉफ्ट–पॉवर का प्रसार व विश्व शान्ति में भारत का योगदान ही कहा जायेगा। मध्यकाल में सूफी रहस्यवाद का विकास भारत के भक्ति आन्दोलन की देन मानी जाती है। सूफी मान्यताएँ अपनी शान्तिप्रियता के लिए विशेष रूप से जानी जाती हैं। भारतीय इतिहास इस बात का साक्षी है कि कैसे मध्य एशिया व मध्य–पूर्व की संस्कृति भारतीय संस्कृति के साथ एकाकार होकर ताजमहल व उत्तर भारतीय संगीत के रूप में दिखाई देती है। यह समन्वयकारी संस्कृति का एक अद्भुत उदाहरण है।

यद्यपि स्वतन्त्रता के पश्चात् विभिन्न धर्मों के कट्टरवादी तत्वों द्वारा सामाजिक सद्भाव व सामाजिक सुदृढ़ता को कमजोर करने का प्रयास किया गया है परन्तु ऐसे तत्त्वों को अपने मकसद में कामयाबी नहीं मिल पायी। कुछ धर्म गुरुओं और योग गुरुओं यथा-- दीपक चोपरा, महर्षि महेश योगी, रविशंकर आदि के द्वारा सामाजिक सुदृढ़ता को मजबूती प्रदान करने का कार्य किया गया है। योग को सॉफ्ट–पॉवर के रूप में इस्तेमाल करने का कार्य भारत सरकार एवं योग गुरुओं के द्वारा किया गया है। भारत सरकार के प्रयास के चलते संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 11 दिसम्बर, 2014 को 21 जून को सर्वसम्मति से विश्व योग दिवस के रूप से मनाने का निर्णय लिया गया है।[25] 21 जून 2015 से प्रत्येक वर्ष विश्व योग दिवस मनाया जा रहा है। योग दुनियां को प्राचीन भारतीय सभ्यता की अमूल्य देन है। योग मानव मस्तिष्क को प्रकृति से जोड़ता है। वर्तमान समय में पर्यावरण संकट के कारण योग की आवश्यकता समस्त मानव जगत को है। ऐसे में योग भारत के लिए सॉफ्ट–पॉवर का महत्त्वपूर्ण स्रोत है।

भारत की बहुलवादी संस्कृति की ताकत का अन्दाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि लगभग अफ्रीका महाद्वीप और मध्य–पूर्व के बराबर जनसंख्या होने तथा दुनिया के किसी भी देश की अपेक्षा अधिक धार्मिक व सांस्कृतिक विविधता के बावजूद एवं साथ ही साथ गैर समतावादी समाज (जिसमें विभिन्न वर्गों का सामाजिक पद क्रम जन्म से निर्धारित होता है) होने के बाद भी अन्य किसी भी संस्कृति की अपेक्षा भारत अधिक शान्तिप्रिय देश है।[26] स्वतन्त्रता के समय से ही लोकतान्त्रिक एवं धर्म निरपेक्ष मूल्यों को अपनाने के कारण ही भारत एक बहुधार्मिक, बहुसांस्कृतिक, बहुनृजातीय देश होने के बावजूद भी एक शान्तिप्रिय देश के रूप में अपना अस्तित्व बखूबी बनाए हुए हैं।

स्वतन्त्रता के बाद अब तक का इतिहास यह बताता है कि जब कभी भी दक्षिणपंथी या वामपंथी शक्तियों द्वारा इस सामाजिक समरसता को तोड़ने का प्रयास किया गया तो ऐसे संकीर्ण विचारों वाले लोग अपने मकसद में कामयाब नहीं हुए हैं। यद्यपि इनके कार्यों से भारतीय सॉफ्ट–पॉवर को क्षति पहुँचती रही है। कई विद्वानों द्वारा कहा जा रहा है कि भारत ने अपनी छवि एक सेतु निर्माण करने वाली सभ्यता की तरह विकसित की है। सिंगापुर के विद्वान किशोर महबूबानी उदाहरण देते हुए कहते हैं कि बालीवुड की फिल्में हिन्दू और मुसलमान दोनों के द्वारा बराबर रुचि के साथ भारत में देखी जाती हैं। कई एशियाई एवं अफ्रीकी मुस्लिम राष्ट्रों में भी बालीवुड की फिल्में बहुत लोकप्रिय हैं।

बालीवुड में कई अभिनेता व अभिनेत्रियाँ मुस्लिम हैं जबकि हालीवुड में यह चीज दुर्लभ है। यदि भारत अपनी सेतु–निर्माणक छवि को ठीक ढंग से विकसित करे तो भारतीय संस्कृति में ही वह शक्ति है जो वैश्वीकरण के दौर में लोगों को पश्चिमी व पूर्वी मानसिकता से बाहर निकालकर एक बेहतर एवं समृद्धिशाली भविष्य की ओर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर सकती है।

राजनीतिक मूल्य

एक बहुसांस्कृतिक, बहुनृजातीय समाज होने के नाते और साथ ही साथ एक लोकतंत्रीय, पंथ–निरपेक्ष व संघात्मक शासन प्रणाली वाला देश होने के नाते भारत सॉफ्ट–पॉवर का प्रचुर स्रोत है। विविधता में एकता के विचार पर आधारित भारत एक सहिष्णु देश है। भारत आन्तरिक रूप से अशान्त एवं विभाजित देशों के लिए एक मॉडेल अथवा प्रतिमान की तरह है। एक अपेक्षाकृत गरीब, अशिक्षित और बहुत अधिक विविधता वाले समाज के लिए लोकतन्त्र से बेहतर शासन प्रणाली अन्य कोई नहीं है। भारत ने अपने लिए इसी कारण लोकतन्त्रात्मक शासन प्रणाली का चुनाव किया है। ऐसे में बहुत से पश्चिमी देश इस बात को लेकर आशान्वित रहे हैं कि भारत वैष्विक स्तर पर लोकतन्त्र को बढ़ावा देने के प्रयास में एक महत्त्वपूर्ण साझीदार के रूप में कार्य करे। अब तक भारत ने पश्चिम की आशा व अपेक्षा के अनुरूप कार्य न करते हुए संयत व्यवहार का परिचय दिया है।

भारत विदेश सम्बन्ध संचालन में अपने लोकतान्त्रिक मूल्यों की राजनीतिक उपयोगिता का महत्त्व भली-भाँति समझता है। लोकतान्त्रिक देशों के साथ सम्बन्ध संचालन में इसका विशेष महत्त्व है लेकिन अब तक भारत अपनी तरह की शासन प्रणाली के प्रसार का बहुत अनिच्छुक रहा है। अन्य देशों पर वाह्य दबाव बनाकर लोकतन्त्र के प्रसार की अपेक्षा भारत की कोशिश रही है कि सकारात्मक उपायों के माध्यम से लोकतन्त्रात्मक शासन प्रणाली के प्रसार की कोशिश की जाय जबकि पश्चिमी देशों की कोशिश दबाव बनाकर ऐसा किए जाने की रही है। सितम्बर 2011 में लीबीया में पश्चिमी देशों के हस्तक्षेप के पश्चात् संयुक्त राष्ट्र महासभा में तत्कालीन प्रधानमन्त्री मनमोहन सिंह ने कहा था-- 'एक लोकतान्त्रिक धर्मनिरपेक्ष, बहुलवादी भारत ही राष्ट्रों के मध्य सहिष्णुता व शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व को बढ़ावा दे सकता है।'[27] साथ ही साथ उन्होंने आगाह किया कि विधि के शासन का अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी उतना ही महत्त्व है जितना कि देशों के भीतर। विभिन्न समाजों के सामाजिक ताने–बाने को बाहरी देशों द्वारा अपनी सैन्य–शक्ति के आधार पर प्रभावित करने की कोशिश नहीं की जानी चाहिए।[28]

भारत एवं पश्चिम के लोकतन्त्रों में लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली को बढ़ावा देने के सन्दर्भ में जो अन्तर है वह वास्तविक है एवं विचारधारात्मक अन्तराल तथा ऐतिहासिक कारणों पर आधारित है। भारत का यकीन गुटनिरपेक्षता, समान सम्प्रभुता एवं प्रादेशिक अखण्डता के सिद्धान्त तथा अहस्तक्षेप के सिद्धान्त में रहा है साथ ही साथ औपनिवेशिक अतीत के कारण भारत का लोकतन्त्र को लेकर नजरिया वैसा नहीं है जैसा कि पश्चिम की शक्तियों का है।[29] भारत पश्चिम के नेतृत्व में लोकतन्त्र को बढ़ावा देने में बहुत सक्रिय नहीं रहा है। भारत ने अब तक केवल इलेक्ट्रानिक मतदान प्रणाली एवं सांसदों के प्रशिक्षण जैसे कार्यों में ही रुचि दिखाई है।[30]

अपनी विदेश नीति को ज्यादा यथार्थ बनाने के प्रयास में एवं लोकतान्त्रिक शासन

प्रणाली के महत्त्व को समझते हुए शीतयुद्धोत्तर काल में भारत अपनी विदेश नीति में कुछ परिवर्तन का इच्छुक रहा है जिससे विदेश नीति के क्षेत्र में सम्प्रभुता के सिद्धान्त एवं हस्तक्षेप के बीच जो द्वैध है उसे हल किया जा सके।[31] एस.डी. मुनी का भी मानना है कि सन् 2000 के आस–पास वैष्विक स्तर पर लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली को बढ़ावा देने के सन्दर्भ में भारत की विदेश नीति में एक रणनीतिक परिवर्तन दिखाई देता है।[32] उस समय स्थापित होने वाले संगठन कम्युनिटी ऑफ डेमोक्रैसीज का भारत संस्थापक सदस्य है। साथ ही सन् 2005 में स्थापित होने वाले संयुक्त राष्ट्र लोकतान्त्रिक कोश का भी भारत संस्थापक सदस्य है। यद्यपि यह बात अलग है कि इन संगठनों में भारत की सक्रियता सबसे कम रही है। यह बात महत्त्वपूर्ण है कि ऐसा भारत ने लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली को वैष्विक स्तर पर बढ़ावा देने के लिए नहीं अपितु अमेरिका से प्रगाढ़ होती मित्रता के सन्दर्भ में किया था। ऐसा भारत ने कूटनीतिक लिहाज से किया था।[33] ऐसा भारत–अमेरिका के उभरती रणनीतिक भागेदारी के कारण ही नहीं बल्कि पाकिस्तान एवं चीन को अलग–थलग करने के प्रयास के कारण भी हुआ था। आतंकवाद व उग्रवाद को प्रतिरोधित करने का प्रयास भी इसके द्वारा किया गया।[34]

वैसे लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली को बढ़ावा देने के सन्दर्भ में भारत का नजरिया बहुत ही यथार्थवादी रहा है। जब भारत के हितों को इससे बढ़ावा मिलता है तो भारत इसका समर्थन करता है साथ ही साथ यह दिखाने का प्रयास भी करता है कि वह पश्चिम के आक्रामक रवैये से अलग भी है। अन्ततः यह कहा जा सकता है कि भारत की लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली को बढ़ावा देने की नीति इस ढंग से गढ़ी गयी है जिससे सॉफ्ट–पॉवर के नजरिए से भी ठीक समझा जाए साथ ही इसे पश्चिमी देशों की नीति से अलग भी दिखाया जा सके। इस स्थिति में भारत को इस बात की कोशिश करनी चाहिए कि उसका नजरिया चीन जैसे देशों से भिन्न दिखे। इससे पश्चिमी देशों का भारत के प्रति नजरिया भी सकारात्मक बना रहेगा और साथ ही भारत विकासशील देशों में अपने प्रति सद्इच्छा को और बढ़ाने में भी कामयाब होगा।

विदेश नीति

स्वतन्त्रता के लिए भारत का अहिंसात्मक संघर्ष, विउपनिवेशीकरण, निःशस्त्रीकरण व राष्ट्रों के शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व को भारत का समर्थन ये सभी ऐसी चीजें हैं जिनके कारण विश्व के विभिन्न भागों में भारत को सराहना प्राप्त होती रही है। गुटनिरपेक्ष आन्दोलन में भारत की भूमिका ने भारत की सकारात्मक छवि गढ़ने में मदद की है जिससे भारत को विकासशील देशों के प्रवक्ता के रूप में खुद को स्थापित करने में मदद मिली है। परन्तु शीत युद्ध की समाप्ति के पश्चात् भारत के इस प्रकार के आकर्षण में कमी आयी है। शीत युद्धोत्तर काल में भारत ने जैसे–जैसे अपनी विदेश नीति को अपेक्षाकृत अधिक यथार्थवादी बनाया है वैसे ही वैसे नयी चुनौतियों का उभार भी हुआ है। भारत की विदेश नीति में 1991 में 'पूर्व की ओर देखो' (Look East Policy) नीति की स्थापना के साथ ही अधिक प्रगाढ़ आर्थिक अन्तर्निर्भरता की शुरूआत हुई जो दक्षिण एशिया में भारत के पड़ोसियों को पहले से ज्यादा रियायत प्रदान करती है। विनम्रता व यथार्थवाद (Modesty & Pragmatism) भारत की परिवर्तित विदेश नीति का अहम हिस्सा है।[35] भारत ने हालिया वर्षों में बहुपक्षीय मंचों पर अपनी बातचीत की रणनीति में परिवर्तन किया है जो इस बात का स्पष्ट संकेत है कि भारत अपनी परम्परागत छवि को बदलना

चाहता है। साथ ही साथ पिछले दशक में भारत की कोशिश रही है कि पश्चिम के साथ सम्बन्धों को और प्रगाढ़ किया जाय क्योंकि इससे वैष्विक फलक पर भारत के उभार को सर्वस्वीकार्य बनाने में सहायता मिलती है। यही वजह है कि अमेरिका के साथ सम्बन्ध प्रगाढ़ से प्रगाढ़तर बनाने की कोशिश रही है जिससे भारत को उभरती शक्ति के रूप में अमेरिकी सद्भावना प्राप्त हो सके। देश का प्रतिष्ठित समूहों G-20, ब्रिक्स (BRICS) एवं इब्सा (IBSA) में प्रवेश देश की अन्तर्राष्ट्रीय छवि को मजबूत बनाने में मददगार साबित हुआ है।

यद्यपि बहुत से ऐसे मुद्दे रहे हैं जब भारत ने ढुलमुल एवं निष्क्रियता की नीति का अनुसरण किया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि भारत विश्व के कुछेक देशों में से है जो सभी देशों से अपने सम्बन्ध अच्छे बनाए रखने की कोशिश करते हैं। यही वजह है कि पश्चिम के साथ प्रगाढ़ होते सम्बन्धों के बीच भी भारत ने अन्तर्राष्ट्रीय रूप से अलग–थलग देशों ईरान व म्यान्मार के साथ भी सम्बन्ध बनाए रखने की पुरजोर कोशिश की है। यही कारण है कि इजराइल के साथ प्रगाढ़ होते सुरक्षा व तकनीकी सम्बन्धों के बावजूद भारत फिलीस्तीन की स्वतन्त्रता का समर्थक रहा है। इसी नीति पर काम करते हुए भारत ने अफ्रीकी देशों के साथ सम्बन्ध मजबूत बनाने की कोशिश की है और वह भी बिना अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय को विचलित किये जैसा कि चीन ने किया है। ये सभी चीजें भारत की विश्व की बड़ी समस्याओं व झगड़ों में मध्यस्थ बनने की क्षमता व सम्भावना को बहुत बढ़ा देती है। यद्यपि भारत अब तक अपनी इस क्षमता का पूरा लाभ नहीं ले पाया है।

संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता की प्राप्ति की दृढ़ इच्छा शक्ति वाले भारत की कोशिश रही है कि दुनियां उसे एक जिम्मेदार राष्ट्र के रूप में पहचाने। भारत विश्व व्यवस्था में परिवर्तनवाद की जगह यथास्थितिवाद का समर्थक रहा है। क्षेत्रीय विस्तार की कोशिश के बजाय भारत चाहता है कि दुनिया उसे उसके लिए वाजिब उच्च स्थिति वाली जगह स्वीकृत करे। पिछले दशकों में भारत ने अपनी नीतियों की स्वीकार्यता बढ़ाने के लिए कई कार्य किये हैं। इसी क्रम में 2006 में जन कूटनीति विभाग (Public Diplomacy Department) की स्थापना विदेश मन्त्रालय के तहत की गयी है। इयॉन हॉल के अनुसार इस नयी संस्था की स्थापना के तीन मायने हैं [36]-- इस संस्था के माध्यम से भारत देश में, विकासशील देशों की दुनिया व पश्चिम से उठने वाली आवाजों को सुनना चाहता है। यह संस्था विदेश सम्बन्धों के मुद्दे पर ज्यादा से ज्यादा लोगों को जोड़कर पारस्परिकता व लोकतन्त्र को बढ़ावा देना चाहती है। साथ ही साथ इस संस्था द्वारा परम्परागत संचार साधनों के स्थान पर नए संचार साधनों के प्रयोग की कोशिश की जा रही है। प्रचुरमात्रा में लेखन सामग्री का प्रकाशन, वृत्तचित्रों के निर्माण की कोशिश भी की जा रही है जिससे भारत की विविधता को विश्व के तमाम देशों तक आसानी से पहुँचाया जा सके। इसमें गोष्ठियों व सम्मेलनों का आयोजन भी शामिल है। जन कूटनीति विभाग (Public Deplomacy Department-- PDD) अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए फेसबुक, ट्विटर, यू–ट्यूब जैसे संचार के नए साधनों का प्रयोग भी कर रहा है।

प्रवासी भारतीयों को युक्तिपूर्वक मातृभूमि से जोड़ने के लिए 2004 में प्रवासी भारतीय मन्त्रालय का गठन किया गया। ऐसा करके भारत न केवल अपने आर्थिक व राजनीतिक

हितों को साधना चाहता है बल्कि अपनी सॉफ्ट पॉवर का और बेहतर इस्तेमाल करना चाहता है।

भारत की बढ़ती सॉफ्ट पॉवर का एक तत्त्व विदेशी सहायता भी है। वैसे इसकी शुरुआत 1950 के दशक से ही हो गयी थी। उस समय भारत अल्प विकासशील देशों को सहायता दिया करता था। व्यापक रूप से इसकी शुरुआत 1964 में तकनीकी सहायता के रूप में की गयी। तब से लेकर अब तक भारत ने इस क्षेत्र में काफी दूरी तय की है। पिछले दो दशकों में भारतीय सहायता के वित्तीय दायरे में, भौगोलिक दायरे में, सहायता के प्रकार व संगठनात्मक क्षमता सभी में महत्त्वपूर्ण वृद्धि हुई है। विभिन्न चुनौतियों व विकासशील देश होने के बावजूद भारत ने अपनी विदेशी सहायता के बजट में लगातार बढ़ोत्तरी की है।

आज भारत दुनिया की सबसे तेजी से वकिसित हो रही अर्थव्यवस्थाओं में शुमार है। वर्षों पहले ही भारत विदेशी सहायता प्राप्त करने वाले देशों की श्रेणी से आगे बढ़ते हुए विदेशी सहायता प्रदान करने वाले देशों की श्रेणी में पहुँच चुका है। सहायता प्रदान करते समय भारत पड़ोसी देशों को प्राथमिकता पर रखता है। विकासात्मक सहायता द्वारा कोई देश न केवल अपने आर्थिक उद्देश्यों को पूरा करता है बल्कि इसके द्वारा रणनीतिक स्तर पर एक ही साथ कई उद्देश्य पूरे किये जाते हैं। आज भारत जितनी सहायता प्राप्त कर रहा है उससे कहीं ज्यादा सहायता उसके द्वारा प्रदान की जा रही है। मजेदार बात तो यह है कि वित्तीय वर्ष 2016-17 के दौरान भारत कभी अपने औपनिवेशिक शासक रहे ब्रिटेन को, उससे मिलने वाली सहायता से ज्यादा सहायता उसे प्रदान की है।

भारत ने दी जाने वाली सहायता का सबसे बड़ा हिस्सा दक्षिण एशियाई देशों को दिया है। दी जाने वाली सहायता का बड़ा हिस्सा अनुदान, ऋण व परम्परागत तकनीकी सहायता के रूप में होता है। ऐसा करते हुए भारत की कोशिश रही है कि दुनिया उसे सूचना तकनीकी के बड़े केन्द्र के रूप में पहचाने। बढ़ती सहायता के ठीक प्रकार से प्रबन्धन हेतु भारत सरकार ने 2012 में विदेश मन्त्रालय के अधीन Development Partnership Administration (DPA) का गठन किया है। इससे जाहिर होता है कि भारत सरकार विदेश सहायता को विदेश नीति के एक महत्त्वपूर्ण उपकरण की तरह इस्तेमाल करना चाह रही है।

एक महत्त्वपूर्ण बात यह भी है कि भारत पश्चिमी राष्ट्रों द्वारा दी जाने वाली सहायता के मुकाबले बेहतर तरीके से प्राप्तकर्त्ता राष्ट्र की मदद करना चाहता है। साउथ–साउथ कान्फ्रेन्स के अवसर पर 15 अप्रैल, 2013 में विदेश सचिव रंजन मथाई ने इसी बात को उद्धृत किया था।[37] यद्यपि दी जाने वाली सहायता के प्रति भारत का परोपकारवादी नजरिया यथार्थवादियों की आलोचना का विषय भी रहा है। इस सन्दर्भ में मुलेन एवं गांगुली का मत है कि भारत के सहायता प्रयास स्पष्टतः विदेश नीति के व्यापक उद्देश्यों एवं निकट पड़ोसियों से भूराजनीतिक सम्बन्धों के मध्य उलझे हुए हैं। भारत विकसित होती अर्थव्यवस्था हेतु ऊर्जा के सुरक्षित स्रोत पाना चाहता है। भारत अपने निर्यात अभिमुखी उद्योगों व सेवाओं हेतु बाजार की प्राप्ति करना चाहता है और साथ ही साथ अपने निकट पड़ोस में अपने भू–राजनीतिक उद्देश्यों को प्राप्त करना चाहता है। एक

स्पष्ट नीति के अभाव में ऐसी परिस्थितियों में भारत अपने को पश्चिमी राष्ट्रों से अलग नहीं दिखा सकता।[38]

भारतीय सॉफ्ट–पॉवर का एक अन्य महत्त्वपूर्ण स्रोत पिछले ढाई दशकों में प्राप्त की गयी आर्थिक वृद्धि है। आर्थिक उदारीकरण, निजीकरण व वैश्वीकरण के चलते जो विकास हुआ है उसने भारत की छवि बदलने का काम किया है। आज भारत आर्थिक रूप से विपन्न राष्ट्र के बजाय एक उभरती अर्थव्यवस्था और आकर्षक बाजार के रूप में पहचाना जाता है। बड़ी संख्या में अंग्रेजी भाषा बोल सकने वाले लोगों, सूचना तकनीकी के ज्ञान से सम्पन्न लोगों और बड़ी संख्या में उपभोक्ता होने के कारण पश्चिमी दुनिया में भारत एक मजबूत राष्ट्र के रूप में उभरकर सामने आता है। इसके चलते प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को बढ़ावा मिलता है। भारत का विकास मॉडल घरेलू उपभोग एवं सेवाओं पर आधारित है। इस कारण बहुत से पर्यवेक्षक इसे जन–केन्द्रित (People-Centric) 'मुम्बई आमराय' (Mumbai Consensus) के रूप में पहचानते हैं, जो बाजार अभिमुखी 'वाशिंगटन आमराय' (Washington Consensus) और राज्य–केन्द्रित, निर्यात–चालित उत्पादन आधारित 'बीजिंग आमराय' (Beijing Consensus) से भिन्न है।[39] शशि थरूर के अनुसार परम्परावादी संपेरों और साधुओं का युग बीत चुका है। अब इनका स्थान सॉफ्टवेयर गुरुओं व कम्प्यूटर विशेषज्ञों द्वारा लिया जा चुका है। आज सूचना तकनीकी वाला भारत व आध्यात्मिक भारत दोनों साथ–साथ विद्यमान हैं और ये एक दूसरे का हाथ पकड़कर देश की सॉफ्ट पॉवर को मजबूत करने का कार्य कर रहे हैं।[40]

देश के आर्थिक विकास ने निवेश के आकर्षण को बढ़ाने का काम किया है। सॉफ्ट–पॉवर के वेहतर इस्तेमाल व उसे और मजबूत करने के लिए आर्थिक क्षेत्र में Indian Brand Equity Foundation (IBEF) का गठन किया गया है। इसकी स्थापना 2006 में की गयी थी। यह PPP के आधार पर कार्य करता है। अपनी स्थापना से लेकर अब तक इस संस्था द्वारा भारतीय अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित रिपोर्टों, आंकड़ों और सर्वेक्षणों का प्रकाशन किया जाता है। इसके द्वारा निवेश बढ़ाने वाले अभियान भी आयोजित किये जाते हैं। व्यापार से जुड़े भारतीय संगठनों-- FICCI, CII, ASOCHAM आदि के द्वारा भी बहुत से देशों में भारत की आर्थिक सॉफ्ट–पॉवर को बढ़ाने का काम किया जा रहा है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पिछले वर्षों में भारतीय सॉफ्ट–पॉवर में महत्त्वपूर्ण वृद्धि हुई है। भारत की शालीन यथार्थवादी विदेश–नीति, आर्थिक विकास, भारत की बहुलवादी लोकतान्त्रिक राजनीतिक शासन प्रणाली की बढ़ती सार्थकता के कारण यह सम्भव हो पाया है। भारत द्वारा अपनी विभिन्न संस्थाओं यथा-- प्रवासी भारतीय मन्त्रालय, Public Diplomacy Division (PDD) और Development Partnership Administration (DPA)-- द्वारा अपनी सॉफ्ट पॉवर के बेहतर इस्तेमाल के लिए महत्त्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। सांस्कृतिक प्रचार, जन–कूटनीति व विकासात्मक आर्थिक सहायता के माध्यम से भारत ने अपने उद्देश्य की प्राप्ति हेतु सराहनीय कार्य किया है। इससे भारत की अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा व विश्वसनीयता में वृद्धि हुई है। जैसा कि ग्लोबल पब्लिक ओपिनियन पोल्स के माध्यम से विदित होता है कि भारत की छवि पहले के मुकाबले सकारात्मक रूप से अच्छी हुई है लेकिन अब भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है।

दुनिया के 21 देशों में रह रहे लोगों पर सन् 2011-12 में BBC द्वारा किये गए एक सर्वेक्षण में पाया गया कि 40% लोग दुनिया पर भारत के प्रभाव को अच्छा मानते हैं। जबकि 27% लोग इसे अच्छा नहीं मानते। जो लोग दुनिया पर भारत के प्रभाव को अच्छा मानते हैं उनमें से 48% लोग भारतीय संस्कृति एवं परम्परा के प्रभाव के कारण ऐसा मानते हैं और भारतीय अर्थव्यवस्था उत्पादन व सेवाओं के कारण अच्छा मानने वालों की संख्या 19% रही। दूसरी तरफ नकारात्मक प्रभाव मानने वालों लोगों में से 29% लोग ऐसा इसलिए मानते थे क्योंकि उनकी नजर में भारत अपने लोगों के प्रति उचित व्यवहार नहीं करता जबकि 25% लोग भारतीय परम्परा व संस्कृति के प्रभाव के कारण ऐसा मानते थे।[41] इस पूरे परिदृश्य से एक बात उभरकर सामने आती है कि भारत के पास सॉफ्ट–पॉवर के उपकरणों एवं नीतियों के रूप में एक ऐसा टूलवॉक्स है जिसके माध्यम से भारत निकट पड़ोस की बड़ी से बड़ी समस्या को साध सकता है।

सॉफ्ट पावर और मीडिया

किसी भी देश की सॉफ्ट पावर को बढ़ाने में प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एवं डिजिटल मीडिया का महत्वपूर्ण योगदान होता है। भारत भी इसका अपवाद नहीं हो सकता। 21वीं सदी में सूचना क्रांति के बाद सॉफ्ट पावर को मजबूत बनाने में डिजिटल मीडिया की भूमिका लगातार महत्वपूर्ण होती चली गई है। आज यूट्यूब, ट्विटर (X), इंस्टाग्राम, फेसबुक जैसे प्लेटफार्मों के माध्यम से भारत अंतरराष्ट्रीय श्रोताओं एवं दर्शकों से जुड़ सकता है और दुनिया के समक्ष अपनी सांस्कृतिक विरासत, लोकतांत्रिक सिद्धांतों एवं आर्थिक विकास को बेहतर तरीके से रख सकता है। आज भारत सरकार डिजिटल इंडिया जैसे कार्यक्रमों के साथ डिजिटल कूटनीति में सक्रियता पूर्वक भाग ले रही है। डिजिटल इंडिया जैसे कार्यक्रमों की मदद से सरकार डिजिटल अवसंरचना एवं नवाचारों को दुनिया के समक्ष रख रही है। आज अमेजॉन प्राइम, नेटफ्लिक्स, डिजनी हॉटस्टार, जी–5, सोनी लिव, एम. एक्स. प्लेयर जैसे स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म्स की मदद से भारतीय फिल्मों व शोज को वैश्विक श्रोताओं व दर्शकों की उपलब्धता सुनिश्चित हो पाई है। इससे भारतीय संस्कृति एवं विरासत को वैश्विक स्तर पर प्रसार में मदद मिलती है और प्रवासी भारतीयों को पहले के मुकाबले बेहतर तरीके से उनकी जड़ों से जोड़ने में मदद मिल रही है।

मीडिया, संस्कृति व कूटनीति के त्रिकोण से वैश्विक धारणाओं को आकार दिया जा रहा है, अंतरराष्ट्रीय संबंधों को मजबूत बनाने की कोशिश की जा रही है और देश की सॉफ्ट पावर को मजबूती मिल रही है। यद्यपि विभिन्न मीडिया संस्थानों में तारतम्य के अभाव के कारण देश की स्थाई छवि को अनवरत रूप से दुनिया के समक्ष रखने में कठिनाई का भी सामना करना पड़ता है। विभिन्न घरेलू मुद्दों के प्रति संतुलित दृष्टिकोण के अभाव में देश की सकारात्मक छवि गढ़ने के कूटनीतिक प्रयासों को धक्का लगता है। यद्यपि कई बार समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, सांस्कृतिक कूटनीति पर ज्यादा जोर देने से देश की आधुनिक उपलब्धियों व कठिनाइयों को सामने लाने में परेशानी का सामना भी करना पड़ता है। घरेलू प्रतिबंधों एवं मीडिया की स्वतंत्रता के मुद्दों ने वैश्विक स्तर पर देश की छवि को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। जबकि सॉफ्ट पावर के लिहाज से वैश्विक स्तर पर खुले एवं लोकतांत्रिक समाज की धारणा का प्रसार आवश्यक है। भाषाई अवरोधों के कारण कई बार सांस्कृतिक कूटनीति बाधित होती है क्योंकि क्षेत्रीय

भाषा के विषय बहुधा वैश्विक श्रोताओं हेतु प्रभावशाली तरीके से अनूदित नहीं हो पाते।

पड़ोसी देशों के साथ भू–राजनीतिक तनावों को सामान्यतया मीडिया द्वारा प्रायोजित विमर्श का रूप दे दिया जाता है जिससे कूटनीतिक प्रयासों को धक्का पहुंचता है। पश्चिमी देशों की तुलना में आज भी भारत की मीडिया की वैश्विक पहुंच सीमित है जिसके कारण चीन के मुकाबले भारत को अपने सांस्कृतिक विमर्श के प्रसार में बाधा आती है। यदि भारत इन मुद्दों पर ध्यान दें तो वह अपनी कूटनीतिक संस्थाओं एवं मीडिया संस्थानों के बीच बेहतर सामंजस्य बनाने में सक्षम हो सकेगा और विकसित भारत के सपनों के अनुरूप अपनी सॉफ्ट पावर क्षमता का वैश्विक स्तर पर प्रसार कर सकेगा।

निष्कर्ष

हार्ड पावर के सापेक्ष सॉफ्ट पावर में ही वह क्षमता है जो दो देशों के मध्य खराब संबंध होते हुए भी अच्छा परिणाम दे सकती है। सॉफ्ट पावर ऐसे परिवेश का निर्माण करने में सहायक है जो सहयोग एवं बातचीत हेतु जरूरी होता है। सद्भावनापूर्ण एवं शांतिपूर्ण माहौल के साथ ही दुनिया जलवायु परिवर्तन, भुखमरी, गरीबी, आतंकवाद, पर्यावरण अवक्रमण, वैश्विक स्वरूप वाली बीमारियों जैसी नई सुरक्षा चुनौतियों से निपट सकती है। सॉफ्ट पावर निवेश और व्यापार की दशा एवं दिशा निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। किसी देश की सॉफ्ट पावर उस देश की आर्थिक क्षमता, शासन की पारदर्शिता और उसके आकर्षक बाजार से आती है। चीन का उदाहरण इसी बात की पुष्टि करता है। वैश्वीकृत दुनिया में सॉफ्ट पावर का महत्व पहले से काफी बढ़ गया है। भारत द्वारा ग्लोबल साउथ–साउथ कोऑपरेशन की वकालत विकासशील देशों में इसलिए सम्मान अर्जित करती है क्योंकि ये देश चीन के मुकाबले भारत के लोकतांत्रिक शासन प्रणाली के साथ विकास को चीन से बेहतर समझते हैं। इसी कारण भारत के प्रति पश्चिमी दुनिया का आकर्षण भी बढ़ जाता है। अफ्रीका एवं लैटिन अमेरिका जैसे क्षेत्रों में जहां भारतीय सॉफ्ट पावर का अभी उभर हो रहा है वहां सोलर कूटनीति भारत की सांस्कृतिक कूटनीति को बढ़ाने में मदद कर सकती है।

भारत अपने सांस्कृतिक, शैक्षिक, तकनीकी व आर्थिक संसाधनों का इस्तेमाल करते हुए भविष्य में विकसित भारत की जरूरत के हिसाब से अपने लिए ऊर्जा, नई तकनीकी, कच्चा माल और बाजार तक आसान पहुंच वाली विश्व व्यवस्था को सुनिश्चित कर सकता है। ऐसे में भारत की सॉफ्ट पावर विभिन्न देशों के साथ संबंधों को नई ऊंचाई देते हुए पारस्परिक सम्मान को बढ़ावा दे सकती है जिससे भारत को भविष्य में अपने राष्ट्रीय हितों को आगे ले जाने में सहूलियत होगी। विकसित भारत के सपने के अनुरूप भारत को अपने सॉफ्ट पावर कूटनीति पर पुनर्विचार करते हुए उसके आधुनिकीकरण की जरूरत है। कृत्रिम बौद्धिकता एवं आभासी वास्तविकता के युग में सांस्कृतिक विरासत के प्रचार एवं प्रसार हेतु व्यक्तिगत रुचियों को ध्यान में रखते हुए कार्य किए जाने की जरूरत है। इस कार्य में कृत्रिम बौद्धिकता का इस्तेमाल किया जा सकता है। आभासी वास्तविकता से जुड़ी तकनीकी द्वारा भारत अपने पर्यटन स्थलों का वर्चुअल पर्यटन किए जाने का प्रबंध कर सकता है। साथ ही साथ अंतरराष्ट्रीय मीडिया संस्थानों के साथ सहयोग बढ़ाने की जरूरत भी है। इसी प्रकार हॉलीवुड, कोरिया एवं यूरोपियन स्टूडियो

के साथ सहयोग बढ़ाते हुए अंतर्राष्ट्रीय पसंद के विचारों पर चल–चित्रों का निर्माण संभव हो सकेगा। इस प्रकार यदि परंपरागत सांस्कृतिक विरासत को तकनीकी नवाचारों से जोड़ दिया जाए तो भारत अपनी सॉफ्ट पावर क्षमता का अभूतपूर्व विस्तार कर सकता है।

स्वयं को 2047 में विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित करने हेतु भारत को अपने घरेलू समस्याओं से निपटना ही होगा। भारत को अपनी लोकतांत्रिक शासन प्रणाली एवं संस्थाओं के लोकतांत्रिक स्वरूप को मजबूत बनाए रखना होगा। केवल ऊपरी ढांचे या सतही संरचना को ही वास्तविक लोकतंत्र नहीं माना जा सकता। शिक्षण संस्थानों को विकसित राष्ट्रों के स्तर का बनाना होगा। साथ ही अनुसंधान व विकास पर जोर देते हुए इसका बजट बढ़ाना होगा। जाति, धर्म, संप्रदाय, क्षेत्रवाद तथा भाषा आधारित संकीर्ण राजनीति के दायरों को तोड़ना होगा। समावेशी विकास को ध्यान में रखते हुए कमजोरों, गरीबों हेतु सार्वजनिक शिक्षा व स्वास्थ्य प्रणाली का विकास करना होगा। कृषि हेतु एक किसानोन्मुखी नीति का अनुसरण करना होगा। वैश्विक स्तर के औद्योगिक ढांचे व सुविधाओं का विकास करना होगा। यदि 2047 तक भारत ऐसा करने में सक्षम हो सकेगा तो 2047 में भारत को विकसित राष्ट्र बनने से दुनिया की कोई ताकत रोक नहीं सकती।

सन्दर्भ

1. टी. वी. पॉल, "इण्डियाज सॉफ्ट पॉवर इन ए. ग्लोबलाइजिंग वर्ल्ड", *करेन्ट हिस्ट्री* (न्यूयार्क, एन.वाई. ...अप्रैल 2014, पृ. सं. 157

2. खिर्नी, ए. के. वी. (2026); विकसित भारत @ 2047: 'द स्ट्रैटेजिज एंड चौलेंजेज; *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज*', वॉल्यूम 21, स्पेशल इश्यू 2, 35–43; DOI: http://doi.org/10.37648/ijps.v21i02.005

3. आर. एस. यादव, ''ट्रेण्डज इन द स्टडीज ऑफ इण्डियाज फॉरेन पॉलिसी'' *इंटरनेशनल स्टडीज,* वाल्यूम 30, अंक 1, जनवरी–मार्च, 1993, पृ. – 53

4. जोसेफ नाई जूनियर, *'सॉफ्ट पॉवरः द मीन्स टू सक्सेज इन वर्ल्ड पालिटिक्स,* न्यूयार्क पब्लिक अफेयर्स, 2004, पृ. सं. 2

5. वही, पृ. सं. 11

6. टी. वी. पॉल, पृ. सं. 157

7. वही, पृ. सं. 157

8. जे. कुर्लेन्जिक, *'चार्म अफेन्सिव : हाऊ चाइनाज सॉफ्ट पॉवर इज ट्रान्सफार्मिंग द वर्ल्ड',* सी टी; येल यूनवर्सिटी प्रेस, न्यु हेवेन, 2007, पृ. सं. 6

9. एस. आर. रोथमैन, ''रिवाजिंग द सॉफ्ट पॉवर कान्सेप्टः ह्वाट आर द मीन्स एण्ड मैकेनिज्म्स ऑफ सॉफ्ट पॉवर'', *जर्नल ऑफ पोलिटिकल पॉवर,* 2011, 4(1), पृ. सं. 49-64

10. जे. एस. नाई जूनियर, ''थिंक अगैनः सॉफ्ट पॉवर'', फॉरेन पालिसी (वेब एक्सक्लूसिव) 23 फरवरी, 2006, Available at: http://www.foreignpalicy.com/articles/2006/02/22/think.again_soft_power (accessed on 12 December 2018)

11. डी. एम. मैलोन, *'इस द एलीफैन्ट डान्स : कन्टेम्पोरेरी इण्डियन फॉरेन पॉलिसी'*; ऑक्सफोर्ड यूनवर्सिटी प्रेस, ऑक्सफोर्ड, 2011, पृ. सं. 252
12. जे. कुर्लेन्जिक, पृ. सं. 6
13. सी. आर. मोहन, इण्डियन डायस्योरा एण्ड सॉफ्ट पॉवर, द हिन्दू 06 जनवरी, 2003
14. शशि थरूर, ''इण्डिया ऐज ए साफ्ट पॉवर'', *इण्डिया इण्टरनेशनल सेण्टर क्वार्टली*, 35(1), समर, 2008, पृ. सं. 32- 45
15. एस. शुक्ला, ''सॉफ्ट पॉवर : इण्डिया टुडे'', 30 अक्टूबर 2006 Available at http://indiatoday.intoday.in/story/upaplays_cultural_diplomacy_card_to_achieve_palitical_goals/1/180 315.html. (accessed on 20/09/2018)
16. शशि थरूर, पृ. सं. 43
17. सी. आर. मोहन, ''सॉफ्ट पॉवर, हाई फैक्ट्स, द इण्डियन एक्सप्रेस'', 19 नवम्बर, 2007
18. एन ब्लैरेल, ''इण्डियाज सॉफ्ट पॉवर : फ्राम पोटेन्शियल टू रियल्टी'', Available at www2.lse.ac.uk/IDEAS, Publications/reports/ pdf/SR010/blarel.pdf (accessed on 25 December 2018)
19. एस. थरूर (2008), 35(1), समर, पृ. सं. 32-45
20. Available at http://www.iccr.gov.in (accessed on 29/12/2018)
21. ICCR (2013b). ICCR Chairs in Foreign countries.Available at http://www.iccrindia.net/chairs.htms, (accessed on 22/04/2017)
22. भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद वार्षिक रिपोर्ट 2024 & 25, पृष्ठ सं. 120
23. इंडिया टुडे, इंडिया सेट्स न्यू रिकॉर्ड फॉरेन स्टूडेंट्स, 4 दिसंबर 2025
24. बिजनेस स्टैंडर्ड, बजट 2025, मालदीव गेट्स मोर एड फ्रॉम इंडिया, बट व्हाट अबाउट बांग्लादेश ?, 26 फरवरी 2026
25. Available at http://unic.org.in/display. php?E=13712&K=Yoga (accessed on 03/01/2019)
26. टी. वी. पॉल, पृ. सं. 160
27. Available at http://mea.gov.in speeche-statements (accessed on 13/01/2019)
28. वही ।

29. पी. कुग्येल, ''द यूरोपियन यूनियन एण्ड इण्डिया : पार्टनर्स इन डेमोक्रैसी?'' *पिज्म पॉलिसी पेपर*, फरवरी 2012, पृ. सं. 25
30. पी. के. जैन, ''द यूरोपियन यूनियन एण्ट डेमोक्रैसी बिल्डिंग इन साउथ एशिया, इण्टरनेशनल इन्स्टीट्यूट फॉर डेमोक्रैसी एण्ड इलेक्टोरल असिस्टैन्स, अक्टूबर, 2009
31. सी. आर. मोहन, ''वैलेन्सिंग इण्टरेस्ट्स एण्ड वैल्यूज : इण्डियाज स्ट्रगल विद डेमोक्रैसी प्रमोशन'', *द वशिगटन क्वार्टली*, 2007, 30(3), पृ. सं. 99-115
32. एस. डी. मुनी, *'इण्डियाज, फॉरेन पॉलिसी : द डेमोक्रैसी डाइमेन्सन'* कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी बुक्स, नई दिल्ली, 2009, पृ. सं. 14-16
33. वही, पृ. सं. 12

34. वही, पृ. सं. 14-16
35. सी. आर. मोहन, *'क्रांसिंग द रुबिकॉन : द शेपिंग ऑफ एण्डियॉज न्यु फॉरेन पॉलिसी'*, पोंग्विन बुक, नई दिल्ली, 2005, पृ. सं. 269
36. इयॉन हॉल, ''इण्डियाज न्यू पब्लिक डिप्लोमेसी : सॉफ्ट पॉवर एण्ड लिमिट्स ऑफ, गवर्नमेन्ट ऐक्शन, *एशियन सर्वे,* नवम्बर–दिसम्बर (2012), 52(6), पृ. सं. 1090
37. Availbale at http://www.mea.gov.in>speeches_state> kenote adressed by Foreign secretary at confrence of southern providers south **....**(occessed on 16/03/2019)
38. आर. डी. मुलेन एवं एस. गांगुली, (8 मई 2012) द राइज ऑफ इण्डियाज सॉफ्ट पॉवर, फॉरेन पॉलिसी, Retrieved from http://www.foreignpolicy.com/articles/2012/05/08/the - rise - of - Indian - Soft - Power (accessed on 17/03/2019)
39. वी. बजाज, ;15 अक्टूबर (2010), इन मुम्बई, एडवाइजर टू ओबामा इक्सटाल्स इण्डियॉज इकोनॉमिक मॉडेल, द न्यूयार्क टाइम्स।
40. शशि थरूर, ''इण्डिया ऐज ए सॉफ्ट पॉवर'', *इण्डिया इण्टरनेशनल सेन्टर* क्वार्टली, 2008, 35(1), समर, पृ. सं. 40
41. बी. बी. सी. वर्ल्ड सर्विस पोल (10 मई 2012) व्यूज ऑफ यूरोप स्लाइड शार्पली इन ग्लोबल पोल, ह्वाइल व्यूज ऑफ चाइना इम्प्रूव।

Copyright © 2026 Author(s). Published by Siri Research Foundation. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution International License (CC BY 4.0).